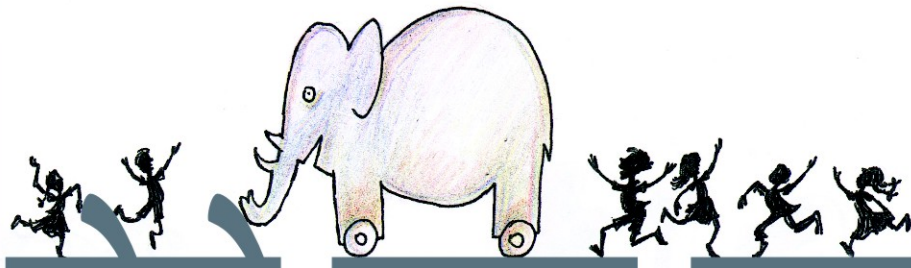

रमेश उपाध्याय

हाथी डोले गाम-गाम

मंच पर हाथी का एक बड़ा-सा कटआउट रखा है, जिसके नीचे पहिए लगे हैं। कुछ बच्चे उसके इर्द-गिर्द उछलते-कूदते गा रहे हैं – हाथी डोले गाम-गाम, जिसका हाथी उसका नाम। एक तरफ से महावत अपना अंकुश आस्तीन से रगड़कर चमकाते हुए आता है। दूसरी तरफ से कालिया खैनी मलते हुए आता है।

महावतः खाना-पीना हो गया, कालिया भाई?

कालियाः हाँ, खाना-पीना तो हो गया, भाई महावत! लेकिन इस हाथी ने दोपहर की नींद हराम कर दी है। मालिक का हुकुम है दिन-रात हाथी की रखवाली करो। जैसे इतने बड़े हाथी को दिन-दहाड़े कोई चोर चुराकर ले जाएगा! हुँह!

(बच्चे चोर सुनकर चौंकते हैं और चुपचाप महावत और कालिया के पीछे खड़े होकर उनकी बातें सुनने लगते हैं।)

कालियाः महावत, यह अंकुश तुमने कहाँ से खरीदा।

महावतः कालिया भाई, मैंने इसे खरीदा नहीं। यह हमारा खानदानी अंकुश है। मेरे पिता भी महावत थे, मेरे दादा भी महावत थे, दादा के दादा भी महावत थे।

कालियाः और वह आदमी कौन था, जो सेठजी को हाथी बेचकर गया?

महावतः सच्ची बात बोलूँ? *(कालिया के पास आकर भेद भरे स्वर में)* चोर! वह आदमी हाथी-चोर था। जंगल से हाथी चुराना और शहर में लाकर बेच देना, यही उसका पेशा है।

कालियाः लेकिन इतना बड़ा हाथी उसने चुराया कैसे?

महावतः *(मूँछ पर ताव देकर)* मेरी मदद से!

कालियाः यानी तुम भी चोर हो?

महावतः नहीं, मैं चोर नहीं, महावत हूँ।

कालियाः पर अभी तुमने कहा, उस चोर ने यह हाथी तुम्हारी मदद से चुराया?

महावतः अरे भाई, चोर-चोर होते हैं, महावत नहीं। हाथी को चुराने से पहले जंगल में जाकर हाथी को पकड़ना होता है। पकड़कर उसे सधाना होता है। सधाना माने सिखाना। यानी हाथी से बैठने को कहा, तो बैठ जाए। उठने को कहो, तो उठ जाए। चलने को कहा, तो चल पड़े। हाथी को सधाना और जंगल से बाहर लेकर आना हरेक के बस की बात नहीं। यह काम चोर नहीं, महावत ही कर सकता है।

इसलिए चोर किसी महावत को साथ लेकर हाथी चुराते हैं।

कालियाः तब तो तुम भी चोर ही हुए।

महावतः क्यों, हम क्यों चोर हुए? हम तो नौकरी करते हैं- चोर की करें चाहे साहूकार की। अब देखो, जिस आदमी ने हाथी सेठजी को बेचा, उसे हाथी हाँकना नहीं आता था। इसलिए उसने मुझे नौकर रखा। सेठजी ने हाथी खरीदा, पर उनको भी हाथी हाँकना नहीं आता। इसलिए उन्होंने हाथी के साथ-साथ मुझे भी रख लिया। अब नौकरी तो नौकरी है, कालिया भाई! मालिक बदलते रहते हैं, महावत महावत ही रहते हैं।

कालियाः यानी कल कोई बड़ा हाथी-चोर तुमसे आकर कहे कि मेरी नौकरी करो, मैं ज़्यादा पैसा दूँगा, तो तुम उसकी नौकरी कर लोगे?

महावतः क्यों नहीं! मान लो, कल कोई दूसरा सेठ तुमसे कहे कि मेरे यहाँ आकर नौकरी करो, मैं दूनी पगार दूँगा, तो क्या तुम उसकी नौकरी नहीं कर लोगे?

कालियाः लेकिन मान लो, कल कोई तुम्हें ज़्यादा पगार वाली नौकरी देकर कहे कि महावत का काम छोड़ दो, तो छोड़ दोगे?

महावतः छोड़ दूँगा। ज़्यादा पगार पाने के लिए लोग पुश्तैनी पेशा तो क्या, अपना देश तक छोड़ देते हैं।

कालियाः तुम चले गए, तो इस हाथी को कौन हाँकेगा?

महावतः कोई भी हाँके। सेठजी खुद हाँक लें। नहीं तो कोई दूसरा महावत रख लें। नहीं तो हाथी को बेच दें। किसी को दे दें या वापस जंगल में छोड़ दें। मुझे क्या?

(गुरुजी आते हैं। कालिया उन्हें प्रणाम करता है। बच्चे भी कालिया और महावत के पीछे से निकलकर आगे आ जाते हैं और गुरुजी को प्रणाम करते हैं। गुरुजी सबको हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं।)

गुरुजीः कैसे हो, कालिया?

कालियाः आपका आशीर्वाद है, गुरुजी!

गुरुजीः यह हाथी किसका है?

कालियाः आपको नहीं मालूम? हमारे सेठ मटरूमलजी का है। चार दिन पहले ही खरीदा है।

गुरुजीः सेठजी हाथी का क्या करेंगे?

कालियाः हमारे सेठजी अब शहर के सबसे बड़े सेठ बन गए हैं, गुरुजी! उनका ख्याल है कि सबसे बड़े सेठ को सबसे ऊँचा भी दिखना चाहिए। इसके लिए हाथी की सवारी बढ़िया रहेगी।

गुरुजीः सिर्फ अपनी शान दिखाने के लिए सेठजी इस बेचारे जीव को जंगल से पकड़वा लाए?

कालियाः इसे सेठजी नहीं लाए, गुरुजी! कोई बेचने आया था। सेठजी ने खरीदा है।

गुरुजीः कितने में?

कालियाः एक लाख में।

गुरुजीः क्या सेठजी को पता नहीं कि शहर की हवा में कितना प्रदूषण है? जंगल की खुली हवा में जीने वाला यह प्राणी यहाँ रहा तो मर जाएगा।

कालियाः *(हँसते हुए)* गुरुजी, आपने वह कहावत ज़रूर सुनी होगी – ज़िन्दा हाथी लाख का, मरे पे सवा लाख का। मरा हुआ हाथी बेचकर भी सेठजी फायदे में ही रहेंगे।

गुरुजीः और यह आदमी कौन है?

कालियाः महावत है, गुरुजी! सेठजी खुद तो हाथी पर चढ़-उतर नहीं सकते। हाथी को हाँक भी नहीं सकते। इसलिए इसको नौकर रखा है और मुझे हाथी की रखवाली के लिए।

गुरुजीः रखवाली के लिए क्यों? हाथी कहीं भागा जाता है?

कालियाः चुराया तो जा सकता है।

गुरुजीः *(हँसकर)* इस पहाड़-से जीव को कौन चुरा सकता है?

कालियाः *(पास जाकर भेद भरे स्वर में)* गुरुजी, यह हाथी चोरी का ही है। एक हाथी-चोर इसे जंगल से चुराकर लाया और सेठजी को बेच गया।

गुरुजीः अपने सेठजी से कहो, हाथी को वापस जंगल में भेज दें। चोरी पकड़ी गई तो उनको जेल जाना पड़ेगा। बड़प्पन की शान ही दिखानी है तो इसकी जगह कोई कीमती कार खरीद लें।

कालियाः कीमती कारों की सेठजी के पास क्या कमी! उनका कहना है हाथी की सवारी में जो शान है वह किसी और सवारी में कहाँ!

गुरुजीः *(हँसकर)* तो ठीक है, तुम करो रखवाली। खूब ध्यान रखना। चोरी का हाथी है, कोई फिर न चुरा ले जाए!

(गुरुजी चले जाते हैं। बच्चे हाथी, महावत और कालिया के इर्द-गिर्द उछल-कूदकर गाने लगते हैं। उनका गाना सुनकर गुरुजी लौटते हैं। उन्हें देखकर बच्चे गाते-गाते ही मंच के अगले हिस्से में आ जाते हैं। धीरे-धीरे मंच के पिछले हिस्से में दृश्य परिवर्तन के लिए अँधेरा हो जाता है।)

बच्चेः हाथी डोले गाम-गाम, जिसका हाथी उसका नाम
हाथी डोले गाम-गाम, जिसका हाथी उसका नाम

गुरुजीः *(लौटकर बच्चों से)* क्यों भई क्यों? क्यों भई क्यों? क्यों न हो इसका अपना नाम?
टॉमी कुत्ता, पूसी कैट
कजरी-धौली गाय और भैंस
तोता तक है आत्माराम
हाथी का फिर क्यों न हो नाम?

बच्चेः गुरुजी, क्या हो इसका नाम?
क्या रक्खें हम इसका नाम?

गुरुजीः सोचो कोई अच्छा नाम
रक्खो कोई भला-सा नाम।

बच्चेः मस्तराम कैसा है नाम?
मस्तराम है इसका नाम।
तो बोलो –
हाथी डोले गाम-गाम
मस्तराम है इसका नाम

बच्चेः मस्तराम है इसका नाम।

गुरुजीः *(ठिठककर)* लेकिन बच्चो, हाथी तो सेठ मटरूमल की कैद में है। यह मस्तराम बनकर आज़ादी के साथ गाम-गाम कैसे घूम सकता है?

बच्चेः तो क्या किया जाए, गुरुजी?

गुरुजीः हाथी को आज़ाद कराना चाहिए।

बच्चेः कैसे, गुरुजी?

गुरुजीः सुनो! *(सबको पास बुलाकर फुसफुसाकर कुछ बताने के बाद)* समझ गए?

बच्चेः *(खुश होकर)* समझ गए, गुरुजी!

गुरुजीः तो जाओ, लेकिन जो बताया है, सावधानी से करना।

(एक तरफ से बच्चे शोर मचाते हुए जाते हैं, दूसरी तरफ से गुरुजी मुस्कराते हुए जाते हैं।)

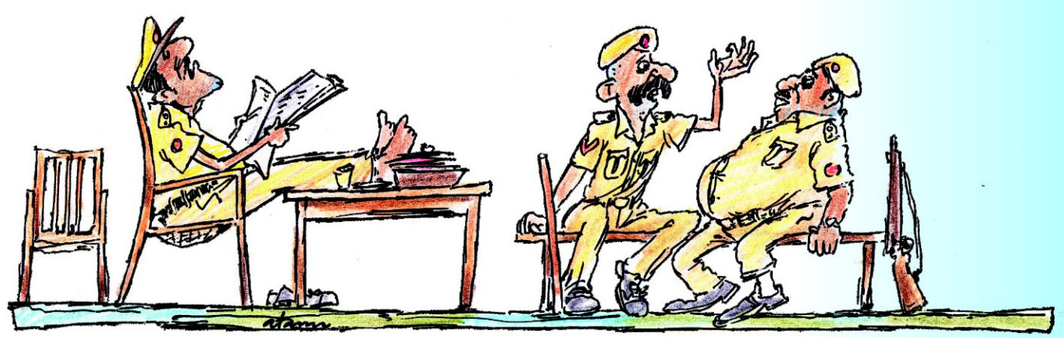

दृश्य परिवर्तन

(थाने का दृश्य। थानेदार अपनी कुर्सी पर बैठा है और मेज़ पर पैर फैलाकर अखबार खोले ऊँघ रहा है। एक बैंच पर दो सिपाही बैठे हैं – मुच्छड़ और तुंदियल। मुच्छड़ खैनी मल रहा है और तुंदियल अधलेटा-सा बैठा है।)

मुच्छड़ः ओए तुंदियल, ग्यारह बज गए। अभी तक कोई मुर्गा फँसने को नहीं आया।

तुंदियलः हाँ, यार! मुर्गा न सही, अब तक दो-चार चूज़े तो आकर फँस ही जाने चाहिए थे।

मुच्छड़ः मुट्ठियाँ ठण्डी हुई जा रही हैं, कोई गर्म करने ही नहीं आ रहा।

(नेपथ्य से कार के रुकने की आवाज़ आती है।)

तुंदियलः *(उठकर सीधा होता है)* आया! कोई मोटा मुर्गा है! कार में आया है!

मुच्छड़ः *(खैनी मुँह में रखकर थानेदार से)* सर! *(ज़ोर से)* सर!

थानेदारः *(जागकर)* क्या है? क्या भूचाल आ गया?

मुच्छड़ः नहीं, सर, माल आ गया!

तुंदियलः गाड़ी में आया है। कोई मालदार आसामी है। ज़रा अच्छी तरह उसकी जेब ढीली करवाइएगा, सर!

मुच्छड़: हें-हें-हें, हमें भी कुछ चाय-पानी मिल जाए, सर!

थानेदार: अच्छा, तो अटेंशन!

(दोनों सिपाही सीधे खड़े हो जाते हैं। एक तरफ से आगे-आगे मटरूमल और उसके पीछे-पीछे कालिया आता है। थानेदार झटपट अखबार पीछे फेंककर सीधा बैठ जाता है और कुछ लिखने लगता है। मटरूमल कालिया को रुकने का इशारा करके थानेदार की तरफ जाता है। कालिया बैंच पर बैठ जाता है।)

मटरूमल: नमस्ते, थानेदार!

थानेदार: *(लिखते हुए, बिना सिर उठाए)* नमस्ते! *(अचानक सिर उठाता है और मटरूमल को देखकर खड़ा हो जाता है।)* अरे, मटरूमलजी, आप? आइए-आइए! *(मुच्छड़ से)* ओह, मुच्छड़! सेठजी के बैठने के लिए कुर्सी साफ कर। *(मटरूमल से)* सेठजी, आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों किया? कोई काम था, तो मुझे बुलवा लिया होता। पुलिस तो आप ही लोगों की सेवा के लिए है। *(मुच्छड़ द्वारा साफ की जा चुकी कुर्सी की तरफ इशारा करके)* आप बैठिए। कहिए, क्या आज्ञा है?

मटरूमल: (बैठते हुए) एक रपट लिखवाने आया हूँ, थानेदार! अभी चार दिन पहले मैंने एक हाथी खरीदा था। उसकी चोरी हो गई।

थानेदार: (चकित होकर) आपके घर में चोरी? सो भी हाथी की चोरी? कमाल है, सेठजी! शहर में (हाथ से ऊँचाई बताते हुए) इतनी बड़ी चोरी हो गई और हमें मालूम ही नहीं! ये न्यूज़ चैनल वाले क्या सो रहे हैं? यह तो ब्रेकिंग न्यूज़ है, सेठजी, ब्रेकिंग न्यूज़!

मटरूमल: न्यूज़ को मारिए गोली, आप रपट लिखिए।

थानेदार: अरे, आप बताइए तो सही। पुलिस वाले सब पर शक करते हैं और सब पर विश्वास। (अपनी बात पर खुद ही खुश होकर) कैसी कही? मिलाइए हाथ! *(मटरूमल हाथ नहीं मिलाता। थानेदार अपना बढ़ा हुआ हाथ धीरे-धीरे नीचे करता है और अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है। तुंदियल को पुकारता है।)* अरे, जा रे, सेठजी के लिए कुछ ठण्डा-वण्डा लेकर आ!

(तुंदियल जाने लगता है।)

मटरूमल: *(इशारे से उसे रोककर थानेदार से)* मुझे ठण्डा-वण्डा नहीं चाहिए। मैं रपट लिखवाने आया हूँ।

थानेदार: आपकी रपट तो मैं लिखूँगा ही। लेकिन पहले मुझे बताइए। मैं शहर के तमाम चोरों को जानता हूँ। अगर उनमें से किसी ने चुराया होगा तो आपका हाथी दो मिनट में बरामद करा दूँगा। वैसे आपको किस पर शक है? किसने चुराया होगा आपका हाथी?

मटरूमल: मुझे शक है एक स्कूल मास्टर पर, जिसे स्कूल के बच्चे ही नहीं, शहर के तमाम लोग गुरुजी कहते हैं।

थानेदार: *(खड़ा हो जाता है)* गुरुजी? क्या बात करते हैं, सेठजी? उनको तो मैं भी जानता हूँ। जब भी मिलते हैं, प्रणाम करता हूँ। स्कूल में मेरा बेटा उनसे पढ़ता है। उनकी बड़ी तारीफ करता है। नहीं, सेठजी, गुरुजी चोर नहीं हो सकते। *(मुच्छड़ से)* ए, मुच्छड़, कुछ सुना तूने? शहर में इतनी बड़ी चोरी हो गई और पुलिस को पता ही नहीं? *(तुंदियल से)* और तू बैठा-बैठा अपनी तोंद बढ़ाता रहता है, शहर में गश्त नहीं लगा सकता? *(मटरूमल से)* गुरुजी के खिलाफ कोई सबूत? कोई गवाह?

मटरूमल: गवाह मैं साथ लाया हूँ। *(कालिया की तरफ इशारा करके)* यह मेरा नौकर है, कालिया। इसने मुझे बताया कि कल वह स्कूल मास्टर हाथी को देखने आया था और इससे हाथी के बारे में खोद-खोदकर पूछताछ कर रहा था। यह भी कह रहा था कि सेठजी ने हाथी खरीदकर अच्छा नहीं किया। जंगल का हाथी शहर की हवा में मर जाएगा, इसलिए उसे वापस जंगल में छोड़ देना चाहिए। जाते-जाते धमकी भी देकर गया कि हाथी को नहीं छोड़ा गया, तो कोई उसे चुरा ले जाएगा। *(कालिया से)* क्यों, कालिया? यही कहा था न उस मास्टर ने?

कालिया: जी, मालिक!

मटरूमल: सुन लिया, थानेदार? ऐसा है तुम्हारा गुरुजी!

थानेदार: विश्वास तो नहीं होता, सेठजी, पर आप कह रहे हैं तो मैं अभी गुरुजी को बुलवाकर पूछता हूँ। *(मुच्छड़ और तुंदियल से)* जाओ, तुम दोनों जाओ और गुरुजी को लेकर आओ।

मुच्छड़: हथकड़ी डालकर लाएँ, सर?

तुंदियल: या रस्सी से बाँधकर?

थानेदार: *(चिल्लाकर)* चुप! गुरुजी कोई मुजरिम नहीं हैं। उनके साथ पुलिस वालों की तरह नहीं, इंसानों की तरह पेश आना। उनको अदब और आदर के साथ बुलाकर लाना। जाओ।

(दोनों सिपाही सेल्यूट मारकर चले जाते हैं।)

थानेदार: *(कुर्सी पर बैठकर मटरूमल से)* आइए, रपट लिखवाइए।

(मटरूमल रपट लिखवाने का और थानेदार रपट लिखने का मूक अभिनय करता है। कालिया बैंच पर बैठा खैनी मलता है और फाँकता है। थोड़ी देर बाद मुच्छड़ और तुंदियल के साथ गुरुजी आते हैं।)

कालिया: प्रणाम, गुरुजी!

गुरुजी: कैसे हो, कालिया?

कालिया: आशीर्वाद है, गुरुजी।

थानेदार: *(कुर्सी से उठकर आगे आता है)* गुरुजी, प्रणाम! माफ कीजिएगा, आपको कष्ट दिया।

गुरुजी: कोई बात नहीं, थानेदार साहब! कहिए, क्या बात है? *(मटरूमल से)* अहा, सेठ मटरूमल जी! बधाई! आपने हाथी खरीदा है। *(मटरूमल जवाब नहीं देता।)*

थानेदार: आप उनसे नहीं, मुझसे बात कीजिए।

गुरुजी: कहिए।

थानेदार: मटरूमलजी ने आपके खिलाफ रपट लिखवाई है कि आपने इनका हाथी चुराया है।

गुरुजी: क्या? इनका हाथी चोरी हो गया?

थानेदार: जी हाँ, और इनका कहना है कि हाथी आपने चुराया है।

गुरुजी: मैंने?

थानेदार: यह मैं नहीं कह रहा हूँ, सेठजी कह रहे हैं। इनका कहना है कि आपने इनका हाथी चुरा लिया है।

गुरुजी: क्या इन्होंने अपना हाथी मेरे घर में देखा है? मेरे छोटे-से घर में इनका हाथी आ सकता है?

मटरूमल: तुमने हाथी चुराकर कहीं छिपा दिया होगा।

गुरुजी: वाह-वाह! क्या बात कही है! *(दर्शकों से)* हाथी क्या सोना-चाँदी है कि चुपचाप चुराकर कहीं छिपाया जा सके? हाथी चुराने के लिए हाथी पर चढ़ना आना चाहिए। मुझे हाथी पर चढ़ना नहीं आता। हाथी को हाँकने के लिए महावत की तरह अंकुश लेकर उसके ऊपर बैठना आना चाहिए। मैं न तो महावत हूँ, न मेरे पास अंकुश है और न ही मुझे हाथी को हाँकना आता है। हाथी को छिपाने के लिए कोई बहुत बड़ा और ऊँचा मकान होना चाहिए, जो मेरे पास नहीं है। हाथी पालने के लिए बहुत रुपया खर्च करना पड़ता है, जो मटरूमल जैसे सेठ के पास ही हो सकता है, मुझ जैसे स्कूल मास्टर के पास नहीं। और सबसे बड़ी बात यह कि मैं हाथी का करूँगा क्या? बच्चों को पढ़ाने के लिए हाथी पर बैठकर स्कूल जाऊँगा? लेकिन चोरी के हाथी पर चढ़कर मैं स्कूल भी कैसे जा सकता हूँ? पकड़ा नहीं जाऊँगा? इतने बड़े पहाड़ जैसे सबूत के साथ!

मटरूमल: *(थानेदार से)* जो भी हो, मेरा हाथी इसी ने चुराया है। मुझे मेरे नौकर ने हाथी की चोरी का आँखों देखा हाल बताया है।

गुरुजी: *(थानेदार से)* लगता है, झूठमूठ मुझे फँसाने के लिए कोई जाल बिछाया गया है और इस नौकर को झूठी गवाही देने के लिए सिखा-पढ़ाकर लाया गया है। *(दर्शकों से)* आप ही बताइए, इनका हाथी मैं क्यों चुराऊँगा? हाथी मेरे किस काम का? पुराने राजा और नवाब हाथी पर सवार होकर निकलते थे। सम्राट और शहंशाह हाथियों को सेना में रखकर लड़ाइयों में उनका इस्तेमाल करते थे। आजकल सवारी के लिए एक से एक बढ़िया वाहन और लड़ाई लड़ने के

लिए एक से एक कारगर साधन आ गए हैं। हाथी अब या तो जंगलों में काटी गई लकड़ी की ढुलाई वगैरह के काम आता है या कुछ खास मौकों पर निकाली जाने वाली शानदार सवारी के काम। इसलिए मैं तो यह मानता हूँ कि शहर में हाथियों का कोई काम नहीं रह गया है। उनको पकड़कर शहर में लाने की बजाय जंगलों में ही रहने देना चाहिए। यहाँ बाँधकर रखने की बजाय वहीं की खुली हवा में आज़ादी से घूमने-फिरने देना चाहिए।

थानेदारः *(मटरूमल से)* कहिए, सेठजी, अब आपको क्या कहना है?

मटरूमलः मुझे यह कहना है कि मेरे हाथी के साथ-साथ वह महावत भी गायब है, जिसको मैंने हाथी हाँकने के लिए नौकर रखा था। इस मास्टर ने हाथी के साथ-साथ मेरे महावत को भी गायब कर दिया है।

गुरुजीः वाह, सेठजी, वाह! अभी तक तो आप मुझ पर हाथी की चोरी का ही इल्ज़ाम लगा रहे थे, अब महावत को भी गायब करने का इल्ज़ाम लगाने लगे! लेकिन यह बताइए, हाथी और महावत जब गायब हुए, तब यह कालिया क्या कर रहा था? इसे तो आपने हाथी की रखवाली के लिए रखा था न?

मटरूमलः इसका कहना है कि रात को पहरा देते-देते पल भर के लिए इसकी आँख लग गई थी। बस,इतनी-सी देर में हाथी और महावत दोनों गायब हो गए।

गुरुजीः क्यों, कालिया? क्या सचमुच ऐसा हुआ कि इधर तेरी पलक झपकी और उधर हाथी महावत के साथ गायब हो गया? और तूने सेठजी से कह दिया कि हाथी मैंने चुराया है?

मटरूमलः *(कालिया को बोलने से रोककर)* क्या तुम कल दिन में इसके पास नहीं आए थे? क्या तुमने कल इससे हाथी के बारे में पूछताछ नहीं की थी? क्या तुमने यह नहीं कहा था कि हाथी को वापस जंगल में छोड़ देना चाहिए और नहीं छोड़ा गया, तो कोई उसे चुरा ले जाएगा?

कालियाः गुरुजी! *(दौड़कर गुरुजी के पैरों में गिर जाता है)* मुझे माफ कर दो, गुरुजी! मैंने आप पर चोरी का झूठा इल्ज़ाम लगाया।

गुरुजीः माफ तो मैं कर दूँगा, लेकिन पहले सच-सच बताओ कि हुआ क्या?

कालियाः बताता हूँ, गुरुजी! हुआ यह कि रात को महावत तो खा-पीकर सो गया था और मैं हाथी की रखवाली कर रहा था। *(मंच पर अँधेरा होना शुरू हो जाता है।)* लाठी लिए हुए मैं हाथी के इर्द-गिर्द घूम रहा था। इधर से उधर। उधर से इधर। इधर से उधर। उधर से इधर।

अँधकार के बाद मद्धिम प्रकाश और रात का दृश्य

(मंच पर हाथी का कटआउट खड़ा है। पास में एक चारपाई बिछी है, जिस पर महावत सो रहा है। कालिया लाठी लिए हुए हाथी के इर्द-गिर्द घूम रहा है। बच्चे चुपके-चुपके आते हैं। कालिया उन्हें देख लेता है और आगे बढ़कर कुछ कहने को होता है कि बच्चे उसे घेर लेते हैं। कोई मुँह पर उँगली रखकर, तो कोई हाथ जोड़कर इशारे से कहता है कि कालिया चुप रहे। वे कालिया को हाथी और महावत से दूर मंच के अगले हिस्से में दर्शकों के पास ले आते हैं।)

हाथी और महावत से दूर मंच के अगले हिस्से में दर्शकों के पास ले आते हैं।)

कालियाः क्या बात है? रात में तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?

पहला बच्चाः कालिया चाचा, हमारी एक बिनती है।

कालियाः क्या?

दूसरा बच्चाः याद है, दोपहर को गुरुजी ने क्या कहा था?

कालियाः क्या?

तीसरा बच्चाः उन्होंने कहा था कि हाथी को जंगल में वापस छोड़ देना चाहिए।

कालियाः हाँ, लेकिन हाथी तो सेठजी का है। मैं उनक नौकर हूँ। मुझे उन्होंने हाथी की रखवाली के लिए रखा है।

चौथा बच्चाः लेकिन आपको मालूम है कि यह हाथी चोरी का है।

कालियाः तो क्या हुआ? सेठजी तो चोरों से चोरी का माल खूब खरीदते हैं। सोने-चाँदी के जेवर, घड़ियाँ, कैमरे, हथियार और पता नहीं क्या-क्या!

पाँचवाँ बच्चाः उन चीज़ों के बारे में पुलिस को पता नहीं चला होगा। लेकिन हाथी के बारे में पुलिस को पता चल गया है।

कालियाः कैसे?

पाँचवाँ बच्चाः *(पहले बच्चे को आगे करके)* इसे पहचानते हैं आप?

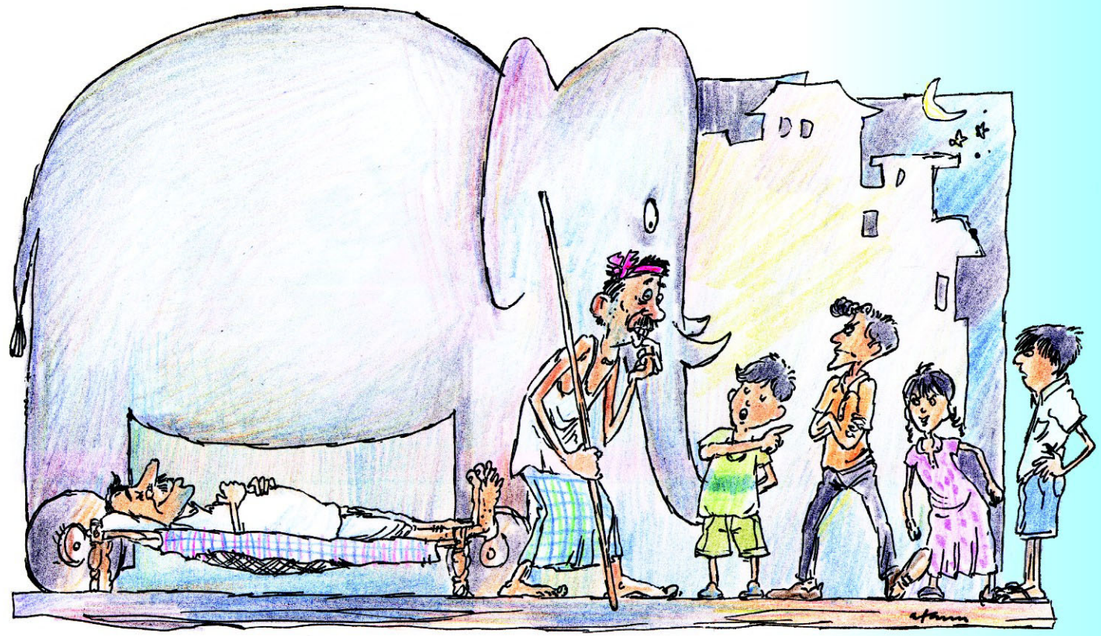

कालियाः हाँ, यह तो थानेदार साहब का लड़का है। दोपहर को यह भी तुम लोगों के साथ यहाँ खेल रहा था न?

चौथा बच्चाः हाँ, चाचा! इसने आपकी और गुरुजी की सब बातें सुन लीं और घर जाकर अपने पिताजी को बता दीं।

कालियाः *(घबराकर)* थानेदार साहब को?

पहला बच्चाः *(कालिया को डराते हुए)* हाँ, चाचा! वे अपने सिपाहियों को लेकर आते ही होंगे। बड़े गुस्से में थे। कह रहे थे कि चोरी का हाथी खरीदने वाले सेठ के साथ-साथ हाथी के महावत और हाथी के रखवाले को भी गिरफ्तार करेंगे और जेल की हवा खिलाएँगे।

कालियाः *(हाथ जोड़कर)* लेकिन मैंने क्या किया है? न तो मैंने चोरी की है, न मैंने चोरी का माल खरीदा है।

दूसरा बच्चाः हम जानते हैं, चाचा, आप बेकसूर हैं। इसीलिए हम आपको बचाने के लिए आए हैं।

कालियाः *(घबराकर)* कैसे?

तीसरा बच्चाः आप इस महावत को जगाकर कहिए कि पुलिस को सब पता चल गया है। थानेदार खुद छापा मारने आ रहा है। अगर वह अपनी जान बचाना चाहता है, तो फौरन हाथी को यहाँ से भगाकर जंगल में ले जाए। हाथी को जंगल में छोड़ दे और खुद कहीं दूर भाग जाए। बहुत दूर। वरना पुलिस उसे पकड़कर ज़िन्दगी भर के लिए जेल में बन्द करा देगी।

(कालिया महावत की ओर जाने लगता है।)

चौथा बच्चाः एक और बात, चाचा! इस महावत से कह दीजिए कि हाथी को जंगल में छोड़कर अपना अंकुश भी वहीं फेंक जाए। और फिर कभी किसी हाथी-चोर की मदद न करे।

कालियाः ठीक है, बेटा! *(जाते-जाते पलटकर)* लेकिन मुझे बड़ा डर लग रहा है, बच्चो! सेठजी कहीं मुझ पर ही हाथी और महावत को भगा देने का इल्ज़ाम न लगा दें।

पाँचवाँ बच्चाः फिकर मत करो, चाचा! गुरुजी ने कहा है कि तुम सुबह उठकर शोर मचा देना कि हाथी चोरी हो गया है। सेठजी तुमसे पूछेंगे कि तुमको किस पर शक है। तब तुम गुरुजी का नाम ले देना। बाकी सब गुरुजी सम्भाल लेंगे।

कालियाः *(डरते हुए)* तो जाऊँ? महावत को जगाऊँ?

बच्चेः जाओ, चाचा! डरो मत। उसे जगाओ और जल्दी से भगाओ।

(कालिया पीछे जाकर महावत को जगाता है। महावत नींद से जागने, कालिया की बात सुनने, भयभीत होने का मूक अभिनय करता है और अंकुश चमकाता हुआ हाथी के कटआउट को नेपथ्य में खींच ले जाता है। इसके साथ ही मद्धिम प्रकाश की जगह मंच पर पूरा प्रकाश हो जाता है। अब मंच पर एक तरफ गुरुजी,

थानेदार, मटरूमल, मुच्छड़ और तुंदियल हैं।)

गुरुजीः *(बच्चों की तरफ जाकर)* शाबाश, बच्चो! *(बच्चे दौड़कर गुरुजी से लिपट जाते हैं)* तुम तो बड़े ही समझदार और साहसी हो। *(थानेदार से)* और थानेदार साहब आपके बेटे ने तो कमाल ही कर दिया।

(मटरूमल पीछे हटता हुआ भाग जाना चाहता है।)

थानेदारः जाने की ऐसी भी क्या जल्दी है, सेठजी? अभी मैं आपको गिरफ्तार नहीं कर रहा हूँ क्योंकि चोरी का जो माल आपने खरीदा, उसका सबूत

(हँसते हुए) हा-हा, इतना बड़ा पहाड़ जैसा सबूत तो गायब हो गया!

गुरुजीः सबूत जंगल की खुली हवा में कहीं विचर रहा होगा। *(हँसते हैं)*

एक बच्चाः *(आगे आकर दर्शकों से)* हाँ-हाँ, बैठे रहिए। नाटक अभी बाकी है।

(प्रकाश मद्धिम होता है। एक तरफ से बड़ों का और दूसरी तरफ चों का प्रस्थान। दृश्य परिवर्तन होने तक अँधेरे में बच्चों के गाने की आवाज़ आती रहती है - हाथी डोले गाम-गाम, मस्तराम है उसका नाम।)

दृश्य परिवर्तन

(मंच पर दोनों तरफ दो पेड़ों के कटआउट खड़े करके जंगल का दृश्य बनाया गया है। दिन-दोपहर का समय है। गुरुजी बच्चों के साथ आते हैं।)

एक बच्चाः गुरुजी, हाथी तो कहीं मिला नहीं।

गुरुजीः यह जंगल बहुत घना नहीं है। महावत ने हाथी को यहाँ छोड़ा होगा, तो हाथी कहीं न कहीं ज़रूर दिख जाएगा। *(बच्चों से)* तुमने उससे अपना अंकुश यहीं फेंक जाने के लिए कह दिया था न?

बच्चेः हाँ-हाँ, गुरुजी!

गुरुजीः हाथी अगर नहीं भी मिला, तो अंकुश तो कहीं न कहीं ज़रूर पड़ा मिल जाएगा।

(किसी की आहट सुनकर गुरुजी बच्चों को पेड़ों के पीछे छिप जाने का संकेत करते हैं। आधे बच्चे एक पेड़ के पीछे और आधे गुरुजी के साथ दूसरे पेड़ के पीछे छिप जाते हैं। मटरूमल कन्धे पर बन्दूक लटकाए हुए आता है। वह उचक-उचककर और आँखों पर हाथ का छज्जा-सा बनाकर दूर देखता हुआ चल रहा है। गुरुजी बच्चों को चुप रहने का इशारा करके पेड़ के पीछे से निकलते हैं और नीचे झुक-झुककर कुछ ढूँढने का अभिनय करते हुए मटरूमल की ओर चलने लगते हैं। नेपथ्य से हास्यजनक संगीत बजता है। मटरूमल के सामने आकर गुरुजी अचानक खड़े हो जाते हैं। मटरूमल डर जाता है। संगीत बन्द।)

गुरुजीः अरे, सेठजी, आप यहाँ जंगल में क्या कर रहे हैं?

मटरूमलः मैं कुछ ढूँढ रहा हूँ। और तुम?

गुरुजीः मैं भी कुछ ढूँढ रहा हूँ।

मटरूमलः क्या ढूँढ रहे हो?

गुरुजीः एक चींटी खो गई है। मैं उस चींटी को ढूँढ रहा हूँ।

मटरूमलः तुम चींटी पालते हो?

गुरुजीः आप हाथी पालते हैं, क्या मैं चींटी भी नहीं पाल सकता?

मटरूमलः लेकिन चींटी? चींटी कौन पालता है।

गुरुजीः मैं पालता हूँ।

मटरूमलः *(दर्शकों से)* लो, देखो! लोग हाथी-घोड़ा पालते हैं, गाय-भैंस पालते हैं, भेड़-बकरी पालते हैं, कुत्ता-बिल्ली पालते हैं, पँछी-पखेरू पालते हैं। और यह बेवकूफ चींटी पालता है। (गुरुजी से) तुम सचमुच चींटी पालते हो?

गुरुजीः हाँ।

मटरूमलः लेकिन चींटी क्यों?

गुरुजीः आप हाथी पालते हैं, सो क्यों?

मटरूमलः हाथी पालने से शान बढ़ती है। हाथी पर बैठकर आदमी कितना ऊँचा उठ जाता है। हाथी सबको दिखता है। तुम्हारी चींटी किसको दिखेगी? मैं हाथी पर चढ़कर शान से घूम सकता हूँ। तुम चींटी पर चढ़ सकते हो? चढ़ोगे, तो चींटी दबकर मर जाएगी।

गुरुजीः मैं चींटी पर सवारी करने के लिए चींटी को नहीं पालता।

मटरूमलः तो तुम उसे क्यों पालते हो?

गुरुजीः वह मुझे अच्छी लगती है।

मटरूमलः अच्छी लगती है? अरे, यह कोई जवाब हुआ? हवा अच्छी लगती है, तो क्या तुम हवा को पाल लोगे? पानी अच्छा लगता है, तो क्या पानी को पाल लोगे? धूप अच्छी लगती है, तो क्या धूप को पाल लोगे?

गुरुजीः जी, हाँ! मैं उन सब चीज़ों को पाल सकता हूँ जो

मटरूमलः तुम कहना क्या चाहते हो?

गुरुजीः सेठजी, मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ कि हाथी हो या चींटी, पालो तो प्रेम से पालो। उसे खरीदकर या चुराकर नहीं, प्रेम से अपना बनाओ। हाथी को हाथी और चींटी को चींटी रहने दो। हाथी को सेठ मटरूमल का हाथी और चींटी को मास्टर मोहनलाल की चींटी क्यों होना चाहिए? हाथी का कोई अपना नाम नहीं हो सकता? चींटी का कोई अपना नाम नहीं हो सकता?

मटरूमलः अच्छा, अब मैं समझा! तूने मेरा हाथी इसलिए गायब कराया कि वह मटरूमल का हाथी न कहलाए।

गुरुजीः *(मुस्कराते हुए)* आप ही बताइए, वह मटरूमल का हाथी क्यों कहलाए? क्या आपने उसे पैदा किया? क्या आपने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया? क्या आपने अपने पालतू पशु की तरह उसे उसका कोई नाम दिया?

मटरूमलः तू कौन होता है पूछने वाला? यह पुलिस थाना ल है। और देख, मेरे पास बन्दूक है। *(कन्धे से बन्दूक उतारकर धमकाते हुए)* यहाँ से भाग जा। मेरे कामों में दखल मत दे, नहीं तो तुझे गोली मार दूँगा।

(दोनों पेड़ों के पीछे छिपे हुए बच्चे झटपट आकर मटरूमल को पकड़ लेते हैं। एक बच्चा उसके हाथ से बन्दूक छीनकर उसी की तरफ तान देता है।)

बच्चाः सेठ के बच्चे! हमारे गुरुजी को गोली मारने की बात करता है?

गुरुजीः *(बच्चे के हाथ से बन्दूक लेकर मटरूमल से)* क्यों, सेठजी? सुना है, आप चोरी का माल खरीदते और बेचते हैं। यह बन्दूक भी चोरी की होगी?

मटरूमलः हाँ, खरीदते हैं। क्या कर लोगे?

गुरुजीः हम आपको थाने ले जाएँगे। फिर जो करना होगा, पुलिस करेगी। *(मटरूमल भागने की कोशिश करता है। बच्चे उसे घेर लेते हैं। गुरुजी बन्दूक से इशारा करते हैं।)* सेठजी, सीधे-सीधे थाने चलिए।

(अचानक मटरूमल को गुरुजी के पैरों के पास पड़ा महावत का अंकुश दिखता है।)

मटरूमलः *(गुरुजी के आगे आकर झुकते हुए)* मुझे माफ कर दो, गुरुजी!

मटरूमल अंकुश को उठाकर एकदम उछलकर खड़ा हो जाता है और उससे गुरुजी पर हमला करना चाहता है। गुरुजी उसकी तरफ बन्दूक तानकर उसके हाथ से अंकुश छीन लेते हैं।)

गुरुजीः *(बच्चों से)* महावत का अंकुश मिल गया, बच्चो? इसका मतलब है कि महावत हाथी को इसी जंगल में छोड़कर और अपना अंकुश फेंककर भागा है। तुम पूरी तरह कामयाब रहे। *(मटरूमल से)* अब चलो, सेठ मटरूमल! जंगल की हवा बहुत खा चुके, अब जेल की हवा खाना?

(आगे-आगे मटरूमल, उसके पीछे बन्दूक ताने गुरुजी और उनके पीछे उछलते-कूदते बच्चे मंच से प्रस्थान करते हुए गाते हैं – हाथी डोले गाम-गाम, मस्तराम है उसका नाम। तभी पेड़ों के पीछे से हाथी का कटआउट एक तरफ से दूसरी तरफ जाता दिखाई देता है।)